निर्वाण - भूमि

(कुशी नगर - गरिमा)



निर्वाण भूमि के उपवन मे अपने विराट पग को पसार।
सो रहे योग निद्रा मे किस हे सत्य-सिन्धु धर्मावतार।
हे कुशीनगर के मौन तपी जागो सोये करुणावतार।
बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, तुम आवो फिर मे एकबार ॥

सिंहासन तिवारी 'कान्त'